ॐ

सिरि-भगवंत-पुप्फदंत-भूदबलि-पणीदो

छक्खंडागमो

सिरि-वीरसेणाइरिय-विरइय-धवला-टीका-समण्णिदो

तस्स पंचमे खंडे वग्गणाए

बंधणाणुयोगद्दारं

सिद्धे विउद्धसयले अज्झत्थबहित्थबंधणुम्मुक्के ।
भत्तीए अहं णमिउं पुणो पुणो बंधणं वोच्छं ।। १ ।।

बंधणे त्ति चउव्विहा कमविभासा✡— बंधो बंधगा बंधणिज्जं बंधविहाणे त्ति ।। १ ।।

बंधो बंधणं, तेण बंधो सिद्धो । बध्नातीति बन्धनः । तदो बंधगाणं गहणं । बध्यत इति कर्मसाधने समाश्रीयमाणे बंधणिज्जस्स गहणं । बध्यते अनेनेति करणसाधने

सब पदार्थोंका साक्षात्कार करनेवाले और भीतर तथा बाहरके सब बन्धनोंसे मुक्त हुए सिद्धोंको बार बार भक्तिपूर्वक नमस्कार करके मैं (ग्रन्थकर्ता) बन्धननामक अनुयोग-द्वारका कथन करता हूं ।। १ ।।

' बन्धन ' इस अनुयोगद्वारमें बन्धनकी क्रमसे चार प्रकारकी विभाषा है— बन्ध, बन्धक, बन्धनीय और बन्धविधान ।। १ ।।

बँधना इसका नाम बंधन हैं, इससे बंधकी सिद्धि होती है । जो बाँधता है वह बंधन है, इससे बंधकका ग्रहण होता है । ' जो बाँधा जाता है ' इस प्रकार कर्मसाधनका आश्रय करने-पर बंधन शब्दसे बधनीयका ग्रहण होता है । ' जिसके द्वारा बाँधा जाता है ' इस प्रकार करण

✡ ताप्रतौ ' कम्मविभासा ' इति पाठः ।

शब्दनिष्पत्तौ सत्यां बन्धविधानोपलब्धिः। तेण बंधणस्स चउव्विहा चेव कमवि-भासा होदि।

दव्वस्स दव्वेण दव्व-भावाणं वा जो संजोगो समवाओ वा सो बंधो णाम। बंधस्स दव्व-भावभेदभिण्णस्स जे कत्तारा ते बंधया णाम। बंधपाओग्गपोग्गलदव्वं बंधणिज्जं णाम। पयडि-ट्ठिदि-अणुभाग पदेसभेदभिण्णा बंधवियप्पा बंधविहाणं णाम। एदेसु चउसु बंधणेसु ताव बंधपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि।

जो सो बंधो णाम सो चउव्विहो–णामबंधो ट्ठवणबंधो दव्व-बंधो भावबंधो चेदि ॥ २ ॥

बंधणयविभासणदाए को णओ के बंधे इच्छदि ॥ ३ ॥

णिक्खेवं काऊण तदट्ठपरूवणं मोत्तूण बंधणयविभासणा किमट्ठं कीरदे? ण एस दोसो, अणवगयणयसरूवस्स भव्वजीवस्स णिक्खेवट्ठपरूवणाए किज्जंतीए अवुत्ततुल्लत्तप्पसंगादो अण्णा✱णविणासणट्ठं परूवणा कीरदे। जदि सा तं ण कुणइ तो सा किंफला

साधनमें बन्धन शब्दकी सिद्धि करनेपर उससे बन्धविधानका ग्रहण होता है। इसलिये बन्धनका विशेष व्याख्यान क्रमसे चार प्रकारका ही होता है।

विशेषार्थ– यहां व्युत्पत्तिपूर्वक 'बन्धन' के चार भेद किये गये हैं– बन्ध, बन्धक बन्धनीय और बन्धविधान। कोई किसीसे बंधता है इससे बन्धकी सिद्धि की गई है। जो बाँधता है वह बन्धक है, और जो बाँधता है वह बन्धनीय है। इससे बन्धक और बन्धनीयकी सिद्धि की गई है। जब कोई वस्तु बधती है तो वह कितने प्रकारसे बंधती है, इसके द्वारा बन्धविधानकी सिद्धि की गई है। इस प्रकार बन्धनके चार भेद ही हो सकते हैं, यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

द्रव्यका द्रव्यके साथ तथा द्रव्य और भावका क्रमसे जो संयोग और समवाय होता है वह बन्ध कहलाता है। द्रव्य और भावके भेदसे भिन्न दो प्रकारके बन्धके जो कर्ता हैं वे बन्धक कहलाते हैं। बन्धके योग्य पुद्‍गल द्रव्य बन्धनीय कहा जाता है। प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेशके भेदसे भेदको प्राप्त हुए बन्धके भेदोंको बन्धविधान कहते हैं। इन चार प्रकारके बन्धनोंमेंसे सर्व प्रथम बन्धका कथन करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं–

बन्धके चार भेद हैं- नामबन्ध, स्थापनाबन्ध, द्रव्यबन्ध और भावबन्ध ॥ २ ॥

बन्धका नयकी अपेक्षा विशेष विचार करनेपर कौन नय किन बन्धोंको स्वीकार करता है ॥ ३ ॥

शंका– निक्षेपका निर्देश करनेके बाद उसका निरूपण करना था, किन्तु वैसा न करके पहले बन्धनका नयकी अपेक्षा विशेष विचार किसलिये किया जाता है?

समाधान– यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, नयके स्वरूपको समझे विना भव्योंको निक्षे-पका कथन करनेपर वह अनुक्तके समान प्राप्त होता है, इसलिये अज्ञानकाविनाश करनेके लिए पहले बन्धनका नयकी अपेक्षा विशेष विचार किया गया है। यदि वह अज्ञानका विनाश न करे

✱ मप्रतिपाठोऽयम्। अ-आ- का-ताप्रतिषु 'अण्णोण्णविणासणट्ठं' इति पाठः।

होज्ज । जदि एवं, तो बंधणयविभासणा चेव पुव्वं किण्ण परूविदा ? ण, णिक्खेवे अणुद्दिट्ठे संते तमाधारं काऊण भण्णमाणणयविभासणाणुववत्तीदो । तम्हा णिक्खेवं काऊण पच्छा बंधणयविभासणा कीरदे ।

णेगम-ववहार-संगहा सव्वे बंधे ॥ ४ ॥

णेगम-ववहार-संगहणया सव्वे बंधे इच्छंति; तेसिं विसए चदुण्णमेदेसिं संभवादो। सुद्धसंगहणए चदुण्णमेदेसिं णिक्खेवाणं संभवो णत्थि त्ति ण वोत्तुं जुत्तं; असुद्धसंगहमस्सिदूणेदेसिं णिक्खेवाणमुवलंभादो । दव्वट्ठिएसु एदेसु णएसु कधं भावणिक्खेवो लब्भइ ? ण, वंजणपज्जायमस्सिदूण भावबंधोवलंभादो ।

उजुसुदो ट्ठवणबंधं णेच्छदि ॥ ५ ॥

कुदो ? तत्थ भावाणं सरिसत्ताभावादो । ण च संकप्पवसेण भावो भावंतरं पडिवज्जदि; एगत्थंभम्मि संकप्पवसेण तिहुवणप्पवेसप्पसंगादो । ण च एवं, तिहुवणभावाणुवलंभादो ।

सद्दणओ णामबंधं भावबंधं च इच्छदि ॥ ६ ॥

तो उसका और क्या फल हो सकता है ?

शंका-यदि ऐसा है तो पहले बन्धका नयकी अपेक्षा ही विशेष विचार क्यों नहीं किया?

समाधान-नहीं, क्योंकि, निक्षेपका कथन किये बिना उसे आधार बनाकर नयकी अपेक्षा विशेष व्याख्यान करना नहीं बन सकता, इसलिये निक्षेपका निर्देश करनेके बाद ही बन्धका नयकी अपेक्षा विशेष व्याख्यान किया है ।

नैगम, व्यवहार और संग्रह नय सब बन्धोंको स्वीकार करते हैं ॥ ४ ॥

नैगमनय, व्यवहारनय और संग्रहनय सब बन्धोंको स्वीकार करते हैं ; क्योंकि, इनके विषयरूपसे ये चारों बन्ध सम्भव हैं । यदि कहा जाय कि शुद्ध संग्रहनयमें ये चारों निक्षेप सम्भव नहीं हैं, सो ऐसा कहना ठीक नहीं है ; क्योंकि, अशुद्ध संग्रहनयकी अपेक्षा ये सब निक्षेप उसके विषय बन जाते हैं ।

शंका-ये तीनों द्रव्यार्थिक नय हैं, इसलिये इनके विषयरूपसे भावनिक्षेप कैसे प्राप्त हो सकता है ?

समाधान-नहीं, क्योंकि, व्यञ्जनपर्यायकी अपेक्षा भावबन्ध इनका विषय बन जाता है ।

ऋजुसूत्रनय स्थापनाबन्धको स्वीकर नहीं करता ॥ ५ ॥

क्योंकि, यह नय पदार्थोंकी सदृशताको स्वीकार नहीं करता । यदि कहा जाय कि संकल्पवश एक पदार्थ दूसरे पदार्थरूप हो जायगा, सो यह बात भी नहीं है; क्योंकि, ऐसा माननेपर एक खम्भेमें संकल्पवश तीन लोकके प्रवेशका प्रसंग प्राप्त होता है । और ऐसा है नहीं, क्योंकि, उसमें तीन लोकका सद्भाव नहीं पाया जाता ।

शब्दनय नामबन्ध और भावबन्धको स्वीकार करता है ॥ ६ ॥

कधं णामबंधस्स तत्थ संभवो ? ण, णामेण विणा इच्छिदत्थपरूवणाए अणुववत्तीदो ।

जो सो णामबंधो णाम सो जीवस्स वा अजीवस्स वा जीवाणं वा अजीवाणं वा जीवस्स च अजीवस्स च जीवस्स च अजीवाणं च जीवाणं च अजीवस्स च जीवाणं च अजीवाणं च जस्स णामं कीरदि बंधो त्ति सो सव्वो णामबंधो णाम ॥ ७ ॥

णामस्स पवुत्ती एदेसु अट्ठसु चेव; एदेहिंतो बज्झस्स अण्णस्साणुवलंभादो । एदेसु अट्ठसु पवत्तमाणबंधसद्दो णामबंधो कधं णाम अप्पाणं⊗ पयासेदि ? ण, सुज्ज-मणिचंदादिसु स-परप्पयासस्सुवलंभादो ।

जो सो ट्ठवणबंधो णाम सो दुविहो- सब्भावट्ठवणाबंधो चेव असब्भावट्ठवणाबंधो चेव ॥ ८ ॥

सब्भावासब्भावट्ठवणबंधेहिंतो पुधभूदट्ठवणबंधाभावादो दुविहो चेव ट्ठवणबंधो होदि । को ट्ठवणबंधो णाम ? अण्णबंधम्मि अण्णबंधस्स सो एसो त्ति बुद्धीए ट्ठवणा

शंका- इन दोनों नयोंमें नामबन्ध कैसे सम्भव है ?

समाधान- नहीं, क्योंकि, नामके बिना इच्छित पदार्थका कथन नहीं किया जा सकता; इस अपेक्षा नामबन्धको इन दोनों नयोंके विषय स्वीकार किया है ।

जो यह नामबन्ध है वह इस प्रकार है- एक जीव, एक अजीव, बहुत जीव, बहुत अजीव, एक जीव और एक अजीव, एक जीव और बहुत अजीव, बहुत जीव और एक अजीव तथा बहुत जीव और बहुत अजीव; इनमेंसे जिसका बन्ध यह नाम किया जाता है वह सब नामबन्ध है ॥ ७ ॥

नामकी प्रवृत्ति इन आठोंमें ही होती है, क्योंकि, इनके बाहर अन्य पदार्थ नहीं पाया जाता ।

शंका- इन आठमें प्रवृत्त हुआ बन्ध शब्द नामबन्ध होता हुआ अपने आपको कैसे प्रकाशित करता है ?

समाधान- नहीं, क्योंकि, सूर्य, मणि और चन्द्र आदिमें स्व और परके प्रकाशनकी योग्यता पाई जाती है । आशय यह है कि जैसे सूर्य आदि स्व-परप्रकाशक होते हैं वैसे नाम शब्द भी स्व-परप्रकाशक है ।

स्थापना बन्ध दो प्रकारका है-- सद्भावस्थापनाबन्ध और असद्भावस्थापनाबन्ध ॥ ८ ॥

सद्भावस्थापनाबन्ध और असद्भावस्थापनाबन्धसे जुदा कोई तीसरा स्थापनाबन्ध नहीं पाया जाता, इसलिये स्थापनाबन्ध दो प्रकारका ही होता है ।

शंका- स्थापनाबन्ध किसे कहते हैं ?

समाधान- अन्य बन्धमें अन्य बन्धकी 'वह यह है' इस प्रकार बुद्धिसे स्थापना करना स्थापनाबन्ध है । आकृतिवाले पदार्थमें सद्भावस्थापना होती है और आकृतिरहित पदार्थमें

⊗ ताप्रतौ 'णामबंधो' । कधं णामं अप्पाणं' इति पाठः ।

ट्ठवणबंधो णाम । आकृतिमति सद्भावस्थापना, अनाकृतिमति तद्विपरीता ।

जो सो सब्भावासब्भावट्ठवणाबंधो णाम तस्स इमो णिद्देसो– कट्ठकम्मेसु वा चित्तकम्मेसु वा पोत्तकम्मेसु वा लेप्पकम्मेसु वा लेण- कम्मेसु वा सेलकम्मेसु वा गिहकम्मेसु वा भित्तिकम्मेसु वा दंतकम्मेसु वा भेंडकम्मेसु वा अक्खो वा वराडओ वा जे चामण्णे एवमादिया सब्भाव-असब्भावट्ठवणाए ठविज्जदि बंधो त्ति सो सव्वो सब्भाव- असब्भावट्ठवणबंधो णाम ॥ ९ ॥

सीवण्णि-खइरसागकट्ठादिसु चक्कबंध-मुरवबंध-विज्जाहरबंध-णागपाबंध-संसरवास- बंधादीणं जहासरूवेण घडियठवणा सब्भावट्ठवणबंधो णाम । अजहासरूवेण एदेसिं बंधाणं तेसु ट्ठवणा असब्भावट्ठवणबंधो णाम । चित्तारेहिंतो वण्णविसेसेहि णिप्फ- ण्णाणि चित्तकम्माणि णाम । वत्थेसु पाण-सालिय-कोसट्टादीहिं जाणि वूण- णकिरियाए✡ णिप्पाइदाणि रूवाणि छिंपएहि वा कदाणि पोत्तकम्माणि णाम । लेप्पयारेहि लेविऊण जाणि णिप्पाइदाणि रूवाणि ताणि लेप्पकम्माणि णाम । पत्थरकट्टएहि✱ जाणि पव्वदेसु घडिदाणि रूवाणि ताणि लेणकम्माणि णाम । तेहि चेव छिण्णसिलासु घडिदरूवाणि सेलकम्माणि णाम ।

असद्भावस्थापना होती है ।

जो वह सद्भावस्थापनाबन्ध और असद्भावस्थापनाबन्ध है उसका निर्देश इस प्रकार है--- काष्ठकर्मोंमें, पोतकर्मोंमें, लेप्यकर्मोंमें, लयनकर्मोंमें, शैलकर्मोंमें, गृहकर्मोंमें, भित्तिकर्मोंमें, दन्तकर्मोंमें, भेंडकर्मोंमें; तथा अक्ष या कौडी इनको आदि लेकर और दूसरे पदार्थ अभेदस्वरूपसे सद्भावस्थापना तथा असद्भावस्थापनामें 'यह बन्ध है' इस रूपसे स्थापित किये जाते हैं वह सब सद्भावस्थापनाबन्ध और अस- द्भावस्थापना बन्ध है ॥ ९ ॥

श्रीपर्णी, खैर और साग काष्ठ आदिमें चक्रबन्ध, मुरजबन्ध, विद्याधरबन्ध, नागपाशबन्ध, और संसारवासबन्ध आदिकी तदाकार स्थापना करना सद्भावस्थापनाबन्ध कहलाता है । इन बन्धोंकी उन श्रीपर्णी आदि काष्ठोंमें अतदाकार स्थापना करना असद्भावस्थापनाबन्ध कहलाता है । चित्रकार रंग विशेषोंसे जो चित्र बनाते हैं वे चित्रकर्म कहलाते हैं । वस्त्रोंमें पाण, सालिय और कोसट्ट आदि बुनकरोंके द्वारा बुनने रूप क्रियासे जो आकार बनाये जाते हैं या छीपा उनपर जो आकार बनाते हैं वे पोतकर्म कहलाते हैं । लेप्यकार लेपन कर जो आकार बनाते हैं वे लेप्यकर्म कहलाते हैं । पत्थरफोडा पर्वतोंमें जो आकार घटित करते हैं वे लयनकर्म कहलाते हैं । वे ही छिन्न शिलाओंमें जो आकार घटित करते हैं वे शैलकर्म कहलाते हैं । मृत्तिकापिण्डके द्वारा प्रासादोंमें जो

✡ अप्रतौ '-कोसट्टादीहि जाणि दूणणकिरियाए' काप्रतौ '-कोसट्टादीहिं जाणि दूणणकिरियाए ताप्रतौ '-कोसट्टादीहिं जाणि दूणणकिरियाए' इति पाठः । ✱ अ-आ-काप्रतिषु 'एत्थरट्टट्टएहि' मप्रतौ 'पत्थरउट्टएहिं' इति पाठः ।

मट्टियपिंडेण पासादेसु✿ घडिदरूवाणि गिहकम्माणि णाम। तेण चेव कुड्डेसु घडिदरूवाणि भित्तिकम्माणि णाम। दंतिदंतादिसु घडिदरूवाणि दंतकम्माणि णाम। भेंडेहि घडिदरूवाणि भेंडकम्माणि णाम। एदाणि दस विह कम्माणि देसामासियाणि। तेण पत्तकम्म-भिंगकम्म-तलवत्तकम्म-तालिवत्तकम्म-भुजवत्तकम्म-सीवणकम्म-मणिवियाण-कम्मादीणि वत्तव्वाणि। एदेसु कम्मेसु जहासरूवेण ट्ठविदबंधो सब्भावट्ठवणबंधो णाम। तव्विवरीयसरूवेण ट्ठवणाबंधो असब्भावट्ठवणबंधो णाम। एदेसिं देसामसियत्तं कधं णव्वदे? उवरि भण्णमाण-एवमादिय-वयणादो। अक्खो णाम पासओ, वराडओ णाम कवड्डओ। एदाणि वे वि वयणाणि असब्भावट्ठवणाए ठविदाणि। कुदो एदं णव्वदे? अक्खेसु वा वराडएसु वा त्ति सत्तमीयंतणिद्देसाभावादो। एदेसु एदे वा अमा एयत्तेण ठवणाए बुद्धीए ठविज्जंति बंधो त्ति सो सव्वो ठवणबंधो णाम। ठवणासद्दो बुद्धिवाचओ त्ति कुदो णव्वदे? धरणी धारणी ट्ठवणा कोट्ठा पदिट्ठा त्ति सुत्तादो✿।

आकार घटित करते हैं वे गृहकर्म कहलाते हैं। उसीसे दिवालोंमें जो आकार बनाये जाते हैं वे भित्तिकर्म कहलाते हैं। हाथीके दांतोंमें जो आकार बनाये जाते हैं वे दन्तकर्म कहलाते हैं। भेंडोंसे जो आकार बनाये जाते हैं वे भेंडकर्म कहलाते हैं। ये दसों ही कर्म देशामर्शक हैं। इससे पत्रकर्म, भृङ्गकर्म, तलवत्त (आभूषण) कर्म, तालिपत्रकर्म, भोजपत्रकर्म, सीनेका कर्म और मणिविज्ञानकर्म आदिको ग्रहण करना चाहिए। इन कर्मोंमें तदाकारस्वरूपसे बंधकी स्थापना करना सद्भावस्थापनाबंध है और अतदाकाररूपसे बंधकी स्थापना करना असद्भावस्थापनाबंध है।

शंका-- इनका देशामर्शकस्थापना कैसे जाना जाता है?

समाधान-- सूत्रमें आगे कहे जानेवाले 'एवमादिय' वचनसे जाना जाता है। अक्ष पांसेका नाम है और वराटक कौडीका नाम है। ये दोनों ही वचन असद्भावस्थापनाके सूचक हैं।

शंका-- यह किस प्रमाणसे जाना जाता है?

समाधान-- सूत्रमें "अक्खेसु वा वराडएसु वा" इस प्रकार सप्तम्यन्त वचनका निर्देश नहीं किया है। इससे जाना जाता है कि ये दोनों वचन असद्भावस्थापनाके सूचक हैं।

इनमें या ये 'अमा' अर्थात् अभेदरूपसे, स्थापना अर्थात् बुद्धिमें 'बन्ध' इस प्रकार स्थापित किये जाते हैं इसलिये यह सब स्थापनाबन्ध कहलाता है।

शंका-- स्थापना शब्द बुद्धिका वाचक है, यह किस प्रमाणसे जाना जाता है?

समाधान-- 'धरणी, धारणी, स्थापना, कोष्ठा और प्रतिष्ठा ये बुद्धिके नाम हैं' इस सूत्रसे जाना जाता है।

विशेषार्थ-- यहाँ सद्भाव और असद्भावरूप दोनों प्रकारके स्थापनाबन्धकी चर्चा की गई है। स्थापना एक पदार्थकी दूसरे पदार्थमें होती है। जिसमें स्थापना की जाती है यदि वह तदाकार होता है तो वह सद्भावस्थापना कहलाती है और यदि अतदकाकार होता है तो वह असद्भावस्थापना कहलाती है। बुद्धिसे 'यह वह ही है' ऐसा एकत्व स्थापित करके स्थापना की जाती है, ऐसा यहाँ समझना चाहिये।

✿ अ-काप्रत्योः 'वट्टइपिंडेण पासादेसु', आप्रतौ 'वट्टइपासादेसु' ता. प्रतौ 'वड्डइपिंडेण पासादेसु' इति पाठः। ✿ प्रकृति अनुयोगद्वार सू० ४० (पु० १३)।

जो सो दव्वबंधो णाम सो थप्पो ॥ १० ॥

किमट्ठं थप्पो कीरदि ? बहुवण्णणिज्जत्तादो ।

जो सो भावबंधो णाम सो दुविहो— आगमदो भावबंधो चेव णोआगमदो भावबंधो चेव ॥ ११ ॥

एवं दुविहो चेव भावबंधो होदि; आगम-णोआगमेहिंतो वदिरित्तभावाणुवलंभादो ।

जो सो आगमदो भावबंधो णाम तस्स इमो णिद्देसो–ठिदं जिदं परिजिदं वायणोवगदं सुत्तसमं अत्थसमं गंथसमं णामसमं घोससमं । जा तत्थ वायणा वा पुच्छणा वा पडिच्छणा वा परियट्टणा वा अणुपेहणा वा थय–थुदि–धम्मकहा वा जे चामण्णे एवमादिया उवजोगा भावे त्ति कट्टु जावदिया उवजुत्ता भावा सो सव्वो आगमदो भावबंधो णाम ॥ १२ ॥

ट्ठिदं जिदं परिजिदं वायणोवगदं सुत्तसमं अत्थसमं गंथसमं णामसमं घोससममिदि णवविहो आगमो । कधमेगो आगमो णवविहत्तं पडिवज्जदे ? लक्खणभेदेण । किं तल्लक्खणं? उच्चदे–अवधृतमात्रं स्थितं नाम । जेण बारह वि अंगाणि अवहारिदाणि सो

द्रव्यबन्ध स्थगित किया जाता है ॥ १० ॥

शंका-किसलिये स्थापित किया जाता है ?

समाधान-क्योंकि, आगे उसका बहुत वर्णन करनेवाले हैं ।

भावबन्ध दो प्रकारका है–आगमभावबन्ध और नोआगमभावबन्ध ॥ ११ ॥

इस प्रकार भावबन्ध दो ही प्रकारका होता है, क्योंकि, आगमभाव और नोआगमभावसे अतिरिक्त अन्य भाव नहीं पाया जाता ।

जो आगमभावबन्ध है उसका निर्देश इस प्रकार है- स्थित, जित, परिजित, वाचनोपगत, सूत्रसम, अर्थसम, ग्रन्थसम, नामसम और घोषसम । इनके विषयमें वाचना, पृच्छना, प्रतीच्छना, परिवर्तना अनुप्रेक्षणा, स्तव, स्तुति, धर्मकथा, तथा इनसे लेकर जो अन्य उपयोग हैं उनमें भावरूपसे जितने उपयुक्त भाव हैं वे सब आगमभावबन्ध हैं ॥ १२ ॥

स्थित, जित, परिजित, वाचनोपगत, सूत्रसम, अर्थसम, ग्रन्थसम, नामसम और घोषसम; यह नौ प्रकारका आगम है ।

शंका–एक आगमके नौ भेद कैसे हो जाते हैं ?

समाधान–लक्षणके भेदसे एक आगमके नौ भेद हो जाते हैं ।

शंका–वह लक्षण कौन-सा है ?

समाधान–कहते हैं, अवधारणमात्रकी स्थित संज्ञा है । जिसने बारह ही अंगोंको

साहू ट्ठिदसुदणाणं होदि। कधं तस्स ट्ठिदत्तं? अण्णत्थ संचाराभावादो। तं पि कुदो? परेसिं करणसत्तीए अभावादो। जो अवगयमत्थं सण्णिमसण्णिं चिंतिऊण वोत्तुं समत्थो सो जिदं णाम सुदणाणं। जो अवगयबारहअंगो संतो खलणेण विणा अवगयमत्थं वोत्तुं समत्थो सो परिजिदं णाम सुदणाणं होदि। ण च एदे वे वि आगमा परपच्चायणक्खमा; दच्छत्ताभावादो। जो अवगयबारहअंगो संतो परेसिं वक्खाणक्खमो सो आगमो वायणोवगदो णाम। का वाचना? शिष्याध्यापनं वाचना। सुत्तं सुदकेवली, तेण समं सुदणाणं सुत्तसमं। अथवा सुत्तं बारहंगसद्दागमो, आइरियोवदेसेण विणा सुत्तादो चेव जं उप्पज्जदि सुदणाणं तं सुतसमं।अत्थो गणहरदेवो, आगमसुत्तेण विणा सयलसुदणाणपज्जाएण परिणदत्तादो। तेण समं सुदणाणं अत्थसमं। अधवा अत्थो बीजपदं, तत्तो उप्पण्णं सयलसुदणाणमत्थसमं। आइरियाणमुवएसो गंथो, तेण समं गंथसमं। बारहअंगसद्दागममाइरियपादमूले सोऊण जं उप्पण्णं सुदणाणं तं गंथसममिदि वुत्तं होदि। आइरियपादमूले बारहंगसद्दागमं सोऊण जस्स अहिलप्पत्थविसयं चेव सुदणाणं समुप्पण्णं सो णामसमं। बारहंगसद्दागमं सुणेंतस्स जस्स सुदपडिबद्धत्थविसयमेव सुदणाणं समुप्पण्णं सो

अवधारित कर लिया है वह साधु स्थित श्रुतज्ञान है।

शंका–इसकी स्थित संज्ञा क्यों है ?

समाधान–अन्यत्र इसका संचार नहीं होता, इससे उसकी स्थित संज्ञा है।

शंका–ऐसा भी क्यों है ?

समाधान–क्योंकि, अन्यके साधकतमरूपसे करण होनेकी शक्ति नहीं पाई जाती।

जो जाने हुए अर्थको धीरे-धीरे विचार कर कहनेके लिये समर्थ होता है वह जित नामका श्रुतज्ञान है। जो बारह अंगोंको जानकर बिना स्खलनके जाने हुए अर्थको कहनेके लिये समर्थ होता है वह परिजित नामका श्रुतज्ञान है। ये दोनों ही आगम अन्यको ज्ञान करानेमें समर्थ नहीं हैं, क्योंकि, इनमें दक्षता नहीं पाई जाती। जो बारह अंगोंको जानकर अन्यके लिये उनका व्याख्यान करनेमें समर्थ है वह वाचनोपगत नामका आगम है।

शंका–वाचना किसे कहते हैं ?

समाधान–शिष्योंको पढ़ाना इसका नाम वाचना है।

सूत्रका अर्थ श्रुतकेवली है। उसके समान जो श्रुतज्ञान होता है वह सूत्रसम श्रुतज्ञान है। अथवा, सूत्रका अर्थ बारह प्रकारका अंगरूप शब्दागम है। आचार्यके उपदेशके बिना सूत्रसे ही जो श्रुतज्ञान उत्पन्न होता है वह सूत्रसम श्रुतज्ञान है। अर्थ गणधरदेवका नाम है, क्योंकि, वे आगमसूत्रके बिना सकल श्रुतज्ञानरूप पर्यायसे परिणत रहते हैं, इनके समान जो श्रुतज्ञान होता है वह अर्थसम श्रुतज्ञान है। अथवा अर्थ बीजपदको कहते हैं, इससे जो समस्त श्रुतज्ञान उत्पन्न होता है वह ग्रन्थसम श्रुतज्ञान है। आचार्योंके उपदेशको ग्रन्थ कहते हैं, इसके समान जो श्रुतज्ञान होता है वह ग्रन्थसम श्रुतज्ञान है। आचार्यके पादमूलमें बारह अंगरूप शब्दागमको सुनकर जो श्रुतज्ञान उत्पन्न होता है वह ग्रन्थसम श्रुतज्ञान है, यह उक्त कथनका तात्पर्य है। आचार्यके पादमूलमें बारह अंगरूप शब्दागमको सुनकर जिसके कथन करने योग्य अर्थको विषय करनेवाला ही श्रुतज्ञान उत्पन्न हुआ है वह नामसम श्रुतज्ञान है। बारह अंगरूप शब्दागमको सुननेवाले जिसके सुने हुए अर्थसे सम्बन्ध रखनेवाले पदार्थको विषय करनेवाला

घोससमं । एवं णवविहं सुदणाणं परूविदं ।

संपहि एत्थ उवओगो वायणा-पुच्छण-पडिच्छण-परियट्टण-अणुपेहण-त्थय-थुदि-धम्मकहाभेएण अट्ठविहो । तत्थ परेसिं वक्खाणं वायणा णाम । तत्थ अणिच्छिदट्ठाणं पण्णवावारो पुच्छणं णाम । आइरिएहि कहिज्जमाणत्थाणं सुणणं पडिच्छणं णाम । अवगयत्थस्स हियएण पुणो पुणो परिमलणं परियट्टणं णाम । सुत्तत्थस्स सुदाणुसारेण चिंतणमणुपेहणं णाम । सव्वसुदणाणविसओ उवजोगो थवो णाम । एगंगविसओ❋ एयपुव्वविसओ वा उवजोगो थुदी णाम । वत्थु-अणुयोगादिविसओ भावो धम्मकहा णाम । एवमादिया उवजोगा भावे त्ति कट्टु जावदिया उवजुत्ता भावा सो सव्वो आगमदो भावबंधो णाम ।

जो सो णोआगमदो भावबंधो णाम सो दुविहो--जीवभावबंधो चेव अजीवभावबंधो चेव ।। १३ ।।

एवं दुविहो चेव णोआगमभावबंधो होदि; जीवाजीववदिरित्तणोआगमभावबंधाभावादो ।

जो सो जीवभावबंधो णाम सो तिविहो--विवागपच्चइयो जीवभावबंधो चेव अविवागपच्चइओ जीवभावबंधो चेव तदुभयपच्चइओ जीवभावबंधो चेव ।। १४ ।।

श्रुतज्ञान उत्पन्न हुआ है वह घोषसम श्रुतज्ञान है । इस प्रकार नौ प्रकारके श्रुतज्ञानका कथन किया।

इनके विषयमें वाचना, पृच्छना, प्रतीच्छना, परिवर्तना, अनुप्रेक्षणा, स्तव, स्तुति और धर्मकथाके भेदसे आठ प्रकारका उपयोग होता है । उनमेंसे अन्यके लिये व्याख्यान करना वाचना हैं । उसमें अनिश्चत अर्थको समझनेके लिये प्रश्न करना पृच्छना है । आचार्य जिन अर्थोंका कथन कर रहे हों उनका सुनना प्रतीच्छना है । जाने हुए अर्थका हृदयसे पुनः पुनः विचार करना परिवर्तना है । सूत्रके अर्थका श्रुतके अनुसार चिन्तन करना अनुप्रेक्षणा है । समस्त श्रुतज्ञानको विषय करनेवाला उपयोग स्तव कहलाता है । एक अंग या एक पूर्वको विषय करनेवाला उपयोग स्तुति कहलाता है । तथा वस्तु और अनुयोगद्वार आदिको विषय करनेवाला उपयोग धर्मकथा कहलाता है । इत्यादि जितने उपयोग हैं उनमें 'यह भाव है' ऐसा समझ कर जितने उपयुक्त भाव होते हैं वह सब आगम भावबन्ध है ।

नोआगमभावबन्ध दो प्रकारका है-जीवभावबन्ध औरअजीवभावबन्ध ।। १३ ।।

इस तरह दो प्रकारका ही नोआगमभावबन्ध है, क्योंकि, जीव और अजीव इन दो भेदोंके सिवा नोआगमभावबन्ध नहीं पाया जाता ।

जीवभावबन्ध तीन प्रकारका है-विपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध, अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध और तदुभयप्रत्ययिक जीवभावबन्ध ।। १४ ।।

❋ अ-आ- काप्रतिषु 'एवंगयविसओ'; ताप्रतौ 'एयंगयविसओ', इति पाठः ।

एवं तिविहो चेव जीवभावबंधो होदि, अण्णस्स चउत्थस्स जीवभावस्स अणुवलंभादो। कम्माणमुदओ उदीरणा वा विवागो णाम, विवागो पच्चओ कारणं जस्स भावस्स सो विवागपच्चइओ जीवभावबंधो णाम। कम्माणमुदय-उदीरणाणमभावो अविवागो णाम। कम्माणमुवसमो खओ वा अविवागो त्ति भणिदं होदि। अविवागो पच्चयो कारणं जस्स भावस्स सो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो णाम। कम्माणमुदय-उदीरणाहिंतो तदुवसमेण च जो उप्पज्जइ भावो सो तदुभयपच्चइयो जीवभावबंधो णाम।

जो सो विवागपच्चइओ जीवभावबंधो णाम तस्स इमो णिद्देसो- देवे त्ति वा मणुस्से त्ति वा तिरिक्खे त्ति वा णेरइए त्ति वा इत्थिवेदे त्ति वा पुरिसवेदे त्ति वा णवुंसयवेदे त्ति वा कोहवेदे त्ति वा माणवेदे त्ति वा मायवेदे त्ति वा लोहवेदे त्ति वा रागवेदे त्ति वा दोसवेदे त्ति वा मोहवेदे त्ति वा किण्हलेस्से त्ति वा णीललेस्से त्ति वा काउलेस्से त्ति वा तेउलेस्से त्ति वा पम्मलेस्से त्ति वा सुक्कलेस्से त्ति वा असंजदे त्ति वा अविरदे त्ति वा अण्णाणे त्ति वा मिच्छादिट्ठि त्ति वा जे चामण्णे

इस प्रकार तीन प्रकारका ही जीवभावबन्ध है, क्योंकि अन्य चौथा जीवभाव नहीं पाया जाता। कर्मोंके उदय और उदीरणाको विपाक कहते हैं, और विपाक जिस भावका प्रत्यय अर्थात् कारण है उसे विपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध कहते हैं। कर्मोंके उदय और उदीरणाके अभावको अविपाक कहते हैं। कर्मोंके उपशम और क्षयको अविपाक कहते हैं, यह उक्त कथनका तात्पर्य है। अविपाक जिस भावका प्रत्यय अर्थात् कारण है उसे अविपाक-प्रत्ययिक जीवभावबन्ध कहते हैं। कर्मोंके उदय और उदीरणासे तथा इनके उपशमसे जो भाव उत्पन्न होता हैं उसे तदुभयप्रत्ययिक जीवभावबन्ध कहते हैं।

विशेषार्थ- यहाँ जीवभावबन्धके तीन भेदोंके स्वरूपपर प्रकाश डाला गया है। विपाकका अर्थ उदय और उदीरणा है। अविपाकका अर्थ उपशम और क्षय है, तथा तदुभयका अर्थ क्षयोपशम है। इसमें देशघातिस्पर्धकोंका उदय और उदीरणा रहती है तथा सर्वघाति स्पर्धकोंका अनुदय रहता है। क्षयोपशम शब्द द्वारा अनुदय ही कहा गया है क्षय अर्थात् अनुदय ही उपशम ऐसी उसकी व्युत्पत्ति है। तदुभयमें विपाक और अविपाक दोनोंका ग्रहण हो जाता है, किन्तु क्षयोपशम शब्द द्वारा उदय और उदीरणा अविवक्षित रहते हैं। अभिप्राय दोनोंका एक है।

जो विपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है उसका निर्देश इस प्रकार है-- देवभाव, मनुष्यभाव, तिर्यंचभाव, नारकभाव, स्त्रीवेद, पुरुषवेद, नपुंसकवेद क्रोधवेद, मानवेद, मायावेद, लोभवेद, रागवेद, दोषवेद, मोहवेद, कृष्णलेश्या, नीललेश्या, कापोतलेश्या, पीतलेश्या, पद्मलेश्या, शुक्ललेश्या, असंयतभाव, अविरतभाव, अज्ञानभाव और मिथ्यादृष्टिभाव; तथा

एवमादिया कम्मोदयपच्चइया उदयविवागणिप्पण्णा भावा सो सव्वो विवागपच्चइयो जीवभावबंधो णाम ।। १५ ।।

देवगदिणामकम्मोदएण अणिमादिगुणं णीदो देवभावो होदि । मणुसगदिणामकम्मोदएण अणिमादिगुणवदिरित्तो मणुस्से त्ति भावो होदि । तिरिक्खगइणामकम्मोदएण तिरिक्खे त्ति भावो । णिरयगइणामकम्मोदएण णेरइए त्ति भावो । इत्थिकम्मोदएण इत्थिवेदो त्ति भावो होदि । पुरिसवेदभावो विवागपच्चइयो; पुरिसवेदोदयजणिदत्तादो। णवुंसयवेदभावो विवागपच्चइयो; णवुंसयवेदकम्मोदयजणिदत्तादो । कोध-माण-माया-लोभभावा विवागपच्चइया; कोध-माण-माया-लोभदव्वकम्मविवागजणिदत्तादो । रागो विवागपच्चइयो; माया-लोभ-हस्स-रदि-तिवेदाणं दव्वकम्मोदयजणिदत्तादो । दोसो विवागपच्चइयो; कोह-माण-अरदि-सोग-भय-दुगुंछाणं दव्वकम्मोदयजणिदत्तादो । पंचविहमिच्छत्तं सम्मामिच्छत्तं सासणसम्मत्तं च मोहो, सो विवागपच्चइयो; मिच्छत्त-सम्मामिच्छत्त-अणंताणुबंधीणं दव्वकम्मोदयजणिदत्तादो । किण्ण–णील–काउ–तेउ–पम्म-सुक्कलेस्साओ विवागपच्चइयाओ अघादिकम्माणं तप्पाओग्गदव्वकम्मोदएण कसाओदएण च छलेस्साणिप्पत्तीदो । असंजदत्तं विवागपच्चइयं; संजमघादिकम्माणमुदएण समुप्पण्णत्तादो । अविरदत्तं विवागपच्चइयं देस—

इसी प्रकार कर्मोदयप्रत्ययिक उदयविपाकसे उत्पन्न हुए और जितने भाव हैं वे सब विपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध हैं ।। १५ ।।

देवगति नामकर्मके उदयसे जो अणिमा आदि गुणोंको प्राप्त करता है वह देवभाव है। मनुष्यगति नामकर्मके उदयसे अणिमा आदि गुणोंसे रहित मनुष्यभाव होता है। तिर्यंचगति नामकर्मके उदयसे तिर्यंचभाव होता है। नरकगति नामकर्मके उदयसे नारकभाव होता है। स्त्रीवेद कर्मके उदयसे स्त्रीवेदरूप भाव होता है। पुरुषवेदभाव विपाकप्रत्ययिक है, क्योंकि, वह पुरुषवेदके उदयसे उत्पन्न होता है। नपुंसकवेदभाव विपाकप्रत्ययिक है, क्योंकि, वह नपुंसकवेद कर्मके उदयसे उत्पन्न होता है। क्रोध, मान, माया और लोभ ये भाव भी विपाकप्रत्ययिक होते हैं; क्योंकि, ये भाव क्रोध, मान, माया और लोभरूप द्रव्यकर्मोंके विपाकसे उत्पन्न होते हैं। राग भी विपाकप्रत्ययिक होता है, क्योंकि, इसकी उत्पत्ति माया, लोभ, हास्य, रति और तीन वेदरूप द्रव्यकर्मोंके विपाकसे होती है। दोष भी विपाकप्रत्ययिक होता है, क्योंकि, इसकी उत्पत्ति क्रोध, मान, अरति, शोक, भय और जुगुप्सारूप द्रव्यकर्मके विपाकसे होती है। पाँच प्रकारका मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व और सासादनसम्यक्त्व मोह कहलाता है। वह भी विपाकप्रत्ययिक होता है क्योंकि, इसकी उत्पत्ति मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व और अनतानुबन्धीरूप द्रव्यकर्मके उदयसे होती है। कृष्ण, नील, कापोत, पीत, पद्म और शुक्ललेश्या भी विपाकप्रत्ययिक होती हैं, क्योंकि, छह लेश्याओंकी उत्पत्ति अघाति कर्मोंमेंसे तत्प्रायोग्य द्रव्यकर्मके उदयसे और कषायके उदयसे होती हैं। असंयतभाव भी विपाकप्रत्ययिक होता है, क्योंकि, यह संयमका घात करने–

सयलविरइघाइकम्मोदयजणिदत्तादो। संजम-विरईणं को भेदो? ससमिदिमहव्वयाणुव्वयाइं संजमो। समिईहि विणा महव्वयाणुव्वया विरई। अण्णाणं विवागपच्चइयं; मिच्छत्तोदयजणिदत्तादो णाणावरणकम्मोदयजणिदत्तादो वा। मिच्छत्तं विवागपच्चइयं; मिच्छत्तोदयजणिदत्तादो। जे च अमी अण्णे च एवमादिया कम्मोदयपच्चइया उदयविवागणिप्पण्णा सो सव्वो विवागपच्चइयो जीवभावबंधो णाम।

जो सो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो णाम सो दुविहो– उवसमियो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो चेव खइयो अविवागपच्चइओ जीवभावबंधो चेव ॥ १६ ॥

वाले कर्मोंके उदयसे उत्पन्न होता है। अविरतभाव भी विपाकप्रत्ययिक है, क्योंकि, यह देशविरति और सकल विरतिके घातक कर्मोंके उदयसे उत्पन्न होता है।

शंका--संयम और विरतिमें क्या भेद है?

समाधान--समितियोंके साथ महाव्रत और अणुव्रत संयम कहलाते हैं और समितियोंके बिना महाव्रत और अणुव्रत विरति कहलाते हैं। यही इन दोनोंमें भेद है।

अज्ञानभाव भी विपाकप्रत्ययिक होता है, क्योंकि, यह मिथ्यात्वके उदयसे अथवा ज्ञानावरणके उदयसे उत्पन्न होता है। मिथ्यात्व भी विपाकप्रत्ययिक होता है, क्योंकि, यह मिथ्यात्वके उदयसे उत्पन्न होता है। इसी प्रकार कर्मोदयप्रत्ययिक उदयविपाकनिष्पन्न और जितने भाव होते हैं वे सब विपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध कहलाते हैं।

विशेषार्थ–प्रकृतमें प्रत्यय शब्द निमित्तवाची है। यहाँ देवभाव, मनुष्यभाव आदि जितने भाव गिनाये हैं ये सब विवक्षित कर्मके उदय और उदीरणाके निमित्तसे होते हैं, इसलिये इन्हें विपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध कहा है। यहाँ ये कुल चौबीस भाव गिनाये हैं, जब कि तत्त्वार्थसूत्रमें कुल इक्कीस भाव ही गिनाये हैं। तत्त्वार्थसूत्रमें गिनाये गये भावोंमेंसे असिद्धत्व भाव यहाँ नहीं गिनाया है और यहाँ राग, दोष, मोह और अविरति ये चार भाव अतिरिक्त गिनाये हैं। इनमेंसे यद्यपि अविरति भावका सामान्यतः असंयतभावमें अन्तर्भाव किया जा सकता है, पर शेष तीन भावोंके गिनानेमें विशिष्ट दृष्टिकोणकी प्रतीति होती है। नोकषायोंके नौ भेद हैं, उनमेंसे रति आदिके उदयसे होनेवाले भावोंका तत्त्वार्थसूत्रमें दर्शन नहीं होता, जब कि यहाँ इन भावोंका राग और दोषमें अन्तर्भाव हो जाता है। इसी प्रकार सासादनभाव और सम्यग्मिथ्यात्वभावकी परिगणना भी तत्त्वार्थसूत्रमें नहीं की गई है जब कि यहाँ इनका अन्तर्भाव मोहमें हो जाता है। एक बात अवश्य है कि यहाँ असिद्धत्व भाव नहीं गिनाया है, पर इसके साथ यहाँ इसी प्रकार और दूसरे भावोंके ग्रहण करनेकी सूचना अवश्य की है। इसलिये कोई हानि नहीं है। आशय यह है कि यहाँ औदयिक भावोंका विचार करते समय उस दृष्टिकोणको अपनाया गया है जिससे प्रायः सभी भावोंका ग्रहण हो जाता है।

अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध दो प्रकारका है--औपशमिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध और क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध ॥ १६ ॥

एवं दुविहो चेव अविवागपच्चइओ जीवभावबंधो होदि । जीव-भव्वाभव्व-त्तादिजीवभावा पारिणामिया वि अत्थि, ते एत्थ किण्ण परूविदा? वुच्चदे-आउआ-दिपाणाणं धारणं जीवणं णाम । तं च अजोगिचरिमसमयादो उवरि णत्थि, सिद्धेसु पाणणिबंधणट्ठकम्माभावादो । तम्हा सिद्धा ण जीवा जीविदपुव्वा इदि । सिद्धाणं पि जीवत्तं किण्ण इच्छिज्जदे ? ण, उवयारस्स सच्चत्ताभावादो । सिद्धेसु पाणाभावण्ण-हाणुववत्तीदो जीवत्तं ण पारिणामियं, किंतु कम्मविवागजं; यद्यस्य भावाभावानुवि-धानतो भवति तत्तस्येति वदन्ति तद्विद इति न्यायात् । तत्तो जीवभावो ओदइओ त्ति सिद्धं । तच्चत्थे जं जीवभावस्स पारिणामियत्तं परूविदं तं पाणधारणत्तं पडुच्च ण परूविदं, किंतु चेदणगुणमवलंबिय तत्थ परूवणा कदा । चेण तं पि ण विरुज्झदे ।

अघाइकम्मचउक्कोदयजणिदमसिद्धत्तं णाम । तं दुविहं-अणादि-अपज्जवसिदं अणादि-सपज्जवसिदं चेदि । तत्थ जेसिमसिद्धत्तमणादि-अपज्जवसिदं ते अभव्वा णाम । जेसिम-वरं ते भव्वजीवा । तदो भव्वत्तमभव्वत्तं च विवागपच्चइयं चेव । तच्चत्थे पारिणामि-यत्तं परूविदं, तेण सह विरोधो कधं ण जायदे? ण, असिद्धत्तस्स अणादि-अपज्जवसिदत्तं

इस तरह दो प्रकारका ही अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध होता है ।

शंका- जीवत्व, भव्यत्व और अभव्यत्व आदिक जीवभाव पारिणामिक भी हैं, उनका यहाँ क्यों कथन नहीं किया ?

समाधान—कहते हैं, आयु आदि प्राणोंका धारण करना जीवन है । वह अयोगीके अन्तिम समयसे आगे नहीं पाया जाता, क्योंकि, सिद्धोंके प्राणोंके कारणभूत आठों कर्मोंका अभाव है । इसलिये सिद्ध जीव नहीं हैं, अधिकसे अधिक वे जीवितपूर्व कहे जा सकते हैं ।

शंका—सिद्धोंके जीवत्व क्यों नहीं स्वीकार किया जाता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, सिद्धोंमें जीवत्व उपचारसे है, और उपचारको सत्य मानना ठीक नहीं है ।

सिद्धोंमें प्राणोंका अभाव अन्यथा बन नहीं सकता, इससे मालूम पड़ता है कि जीवत्व पारिणामिक नहीं है । किन्तु वह कर्मके विपाकसे उत्पन्न होता है, क्योंकि, ' जो जिसके सद्भाव और असद्भावका अविनाभावी होता है वह उसका है, ऐसा कार्य-कारणभावके ज्ञाता कहते हैं ' ऐसा न्याय है । इसलिये जीवभाव औदयिक है, यह सिद्ध होता है । तत्त्वार्थसूत्रमें जीवत्वको जो पारिणामिक कहा है वह प्राणोंको धारण करनेकी अपेक्षासे नहीं कहा है, किन्तु चैतन्य गुणकी अपेक्षासे वहाँ वैसा कथन किया है, इसलिये वह कथन भी विरोधको प्राप्त नहीं होता ।

चार अघाति कर्मोंके उदयसे उत्पन्न हुआ असिद्धभाव है । वह दो प्रकारका है- अनादि-अनन्त और अनादि-सान्त । इनमेंसे जिनके असिद्धभाव अनादि-अनन्त है वे अभव्य जीव हैं और जिनके दूसरे प्रकारका है वे भव्य जीव हैं । इसलिये भव्यत्व और अभव्यत्व ये भी विपाक-प्रत्ययिक ही हैं ।

शंका—तत्त्वार्थसूत्रमें इन्हें पारिणामिक कहा है, इसलिये इस कथनका उसके साथ विरोध कैसे नहीं होगा ?

अणादि-सपज्जवसिदत्तं च णिक्कारणमिदि तत्थ तेसिं पारिणामियत्तब्भुवगमादो।

जो सो ओवसमिओ अविवागपच्चइओ जीवभावबंधो णाम तस्स इमो णिद्देसो–से उवसंतकोहे उवसंतमाणे उवसंतमाए उवसंतलोहे उवसंतरागे उवसंतदोसे उवसंतमोहे उवसंतकसायवीयरागछदुमत्थे उवसमियं सम्मत्तं उवसमियं चारित्तं, जे चामण्णे एवमादिया उवसमिया भावा सो सव्वो उवसमियो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो णाम ।१७।

उवसंतकोहे अणियट्टिम्मि जो भावो सो उवसमिओ अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो; दव्व-भावकोधाणमुवसमेण समुब्भूदत्तादो। उवसंतमाणे जीवे जो भावो सो उवसमियो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो; दव्व-भावमाणाणमुवसमेण समुब्भूदत्तादो। उवसंतमाये जीवे जो भावो सो उवसमियो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो; दव्व-भावमायाणमुवसमेण समुब्भूदत्तादो। उवसंतलोभे जीवे जो भावो सो वि उवसमियो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो; दव्व-भावलोहाणमुवसमेण समुब्भूदत्तादो। उवसंतरागे जीवे जो भावो सो उवसमियो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो; माया-लोभ-हस्स-रदि-तिवेददव्वकम्माणमुवसमेण समुब्भूदत्तादो। उवसंतदोसे जीवे जो भावो सो उवसमियो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो;

समाधान–नहीं, क्योंकि, असिद्धत्वका अनादि-अनन्तपना और अनादि-सान्तपना निष्कारण है, यह समझकर उन्हें वहाँ पारिणामिक स्वीकार किया गया है।

जो औपशमिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है उसका निर्देश इस प्रकार है– उपशान्तक्रोध, उपशान्तमान, उपशान्तमाया, उपशान्तलोभ, उपशान्तराग, उपशान्तदोष, उपशान्तमोह, उपशान्तकषाय-वीतरागछद्मस्थ, औपशमिक सम्यक्त्व और औपशमिक चारित्र, तथा इनसे लेकर और जितने औपशमिक भाव हैं वह सब औपशमिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है ॥ १७ ॥

अनिवृत्तिकरणमें क्रोधके उपशमसे जो भाव होता है वह औपशमिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, वह द्रव्यक्रोध और भावक्रोधके उपशमसे उत्पन्न होता है। उपशान्तमान जीवके जो भाव होता है वह औपशमिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, वह द्रव्यमान और भावमानके उपशमसे उत्पन्न होता है। उपशान्तमाया जीवमें जा भाव होता है वह औपशमिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, वह द्रव्यमाया और भावमायाके उपशमसे उत्पन्न होता है। उपशान्तलोभ जीवमें जो भाव होता है वह भी औपशमिक अविपाक-प्रत्ययिक जीवभावबंध है, क्योंकि, वह द्रव्यलोभ और भावलोभके उपशमसे उत्पन्न होता है। उपशान्तराग जीवमें जो भाव होता है वह औपशमिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, वह माया, लोभ, हास्य, रति और तीन वेदरूप द्रव्यकर्मोंके उपशमसे उत्पन्न होता है। उपशान्तदोष जीवमें जो भाव होता है वह औपशमिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है,

कोह-माण-अरदि-सोग-भय-दुगुंछाणं दव्वकम्मुवसमेण समुब्भूदत्तादो । (उवसंतमोहे जीवे जो भावो सो वि उवसमियो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो, अट्ठावीस मोहणीयपयडीणं दव्वकम्मुवसमेण समुब्भूदत्तादो) उवसंतकसायवीयरायछदुमत्थे जीवे जो भावो सो वि उवसमियो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो; पणुवीसकसायाणं दव्वकम्मुवसमेण समुब्भूदत्तादो । जमुवसमियं सम्मत्तं तं पि उवसमियो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो; तिविहदंसणमोहणीयदव्वकम्मुवसमेण समुप्पत्तीए । जं उवसमियं चारित्तं तं पि गवसमियो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो; चारित्तमोहणीयस्स देस-सव्वुवसमणाए समुब्भूदत्तादो । जे च अमी पुव्वुत्ता भावा अण्णो वा वि✱ अपुव्व-अणियट्टि-सुहुमसांपराइय-उवसंतकसाएसु समयं पडि जे उप्पज्जमाणा जीवभावा सो सव्वो उवसमिओ अविवागपच्चइओ जीवभावबंधो णाम ।

जो सो खइओ अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो णाम तस्स इमो णिद्देसो–से खीणकोहे खीणमाणे खीणमाये खीणलोहे खीणरागे खीणदोसे खीणमोहे खीणकसायवीयरायछदुमत्थे खइयसम्मत्तं खइयचारित्तं खइया दाणलद्धी खइया लाहलद्धी खइया भोगलद्धी खइया परिभोगलद्धी खइया वीरियलद्धी केवलणाणं केवलदंसणं सिद्धे बुद्धे परिणिव्वुदे सव्वदुक्खाणमंतयडे त्ति जे चामण्णे एवमादिया खइया भावा सोसव्वो खइयो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो णाम ॥१८॥

क्योंकि, वह क्रोध, मान, अरति, शोक, भय और जुगुप्सारूप द्रव्य कर्मोंके उपशमसे उत्पन्न होता है । उपशान्तकषाय-वीतरगछद्मस्थ जीवमें जो भाव होता है वह भी औपशमिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, वह पच्चीस कषायरूप द्रव्यकर्मोंके उपशमसे उत्पन्न होता है । जो औपशमिक सम्यक्त्व है वह भी औपशमिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, व तीन प्रकारके दर्शनमोहनीय द्रव्यकर्मके उपशमसे उत्पन्न होता है । जो औपशमिक चारित्र है वह भी औपशमिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, वह चारित्रमोहनीयकी देशोपशमना और सर्वोपशमनासे उत्पन्न होता है । चूंकि ये पूर्वोक्त भाव और दूसरे भी अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण, सूक्ष्मसाम्पराय और उपशान्तकषाय गुणस्थानोंमें प्रत्येक समयमें उत्पन्न होनेवाले जो जीवके भाव हैं वह सब औपशमिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है ।

जो क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है उसका निर्देश इस प्रकार है– क्षीणक्रोध, क्षीणमान, क्षीणमाया, क्षीणलोभ, क्षीणराग, क्षीणदोष, क्षीणमोह, क्षीणकषाय-वीतरागछद्मस्थ, क्षायिक सम्यक्त्व, क्षायिक चारित्र, क्षायिक दानलब्धि, क्षायिक लाभलब्धि, क्षायिक भोगलब्धि, क्षायिक परिभोगलब्धि, क्षायिक वीर्यलब्धि, केवलज्ञान, केवलदर्शन, सिद्ध, बुद्ध, परिनिर्वृत्त, सर्वदुःख-अन्तकृत्, इसी प्रकार और भी जो दूसरे क्षायिक भाव होते हैं वह सब क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है ॥१८॥

✱ प्रतिषु 'अणेया वि' इति पाठः ।

खीणकोहे जीवे जो भावो सो खइयो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो णाम; दव्व-भावकोहाणं णिरवसेसक्खएण समुप्पण्णत्तादो। खीणमाणे जीवे जो भावो सो वि खइओ अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो णाम; दव्व-भावमाणक्खएण समुप्पत्तीदो✽। खीण-माए जीवे जो भावो सो वि खइओ अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो; दुविहमायक्ख-एण समुप्पत्तीदो। खीणलोहे जीवे जो भावो सो वि खइओ अविवागपच्चइओ जीव-भावबंधो; दुविहलोहक्खएण समुप्पत्तीदो। खीणरागे जीवे जो भावो सो अविवाग-पच्चइयो जीवभावबंधो; माय-लोह-हस्स-रदि-तिवेदाणं दुविहकम्मक्खएण समुब्भूद-त्तादो। खीणदोसे जीवे जो भावो सो वि खइयो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो; कोह-माण-अरदि सोग-भय-दुगुंछाणं दुविहकम्मक्खएण समुप्पत्तीदो। खीणमोहे जीवे जो भावो सो वि खइओ अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो; अट्ठावीसभेदभिण्णमोह-क्खएण समुब्भूदत्तादो। खीणकसायवीदरागछदुमत्थे जीवे जो भावो सो वि खइओ अवि-वागपच्चइयो जीवभावबंधो; पंचवीसकसायाणं णिस्सेसक्खएण समुप्पत्तीदो। जं खइयं सम्मत्तं तं पि खइयो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो; दंसणमोहक्खएण समु-प्पत्तीदो। जं खइयं चारित्तं तं पि खइयो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो, चारि-त्तमोहक्खएण समुप्पत्तीदो। जा खइया दाणलद्धी सो वि खइयो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो; दाणंतराइयस्स णिम्मूलक्खएण समुप्पत्तीदो। अरहंता खीणदाणंतराइया

क्षीणक्रोध जीवमें जो भाव होता है वह क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, वह द्रव्य और भाव क्रोधके सर्वथा क्षयसे उत्पन्न होता है। क्षीणमान जीवमें जो भाव होता है वह भी क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, वह द्रव्यमान और भाव-मानके क्षयसे उत्पन्न होता है। क्षीणमाया जीवमें जो भाव होता है वह भी क्षायिक अविपाक-प्रत्ययिक जीवभावबंध है, क्योंकि, वह दो प्रकारकी मायाके क्षयसे उत्पन्न होता है। क्षीणलोभ जीवमें जो भाव होता है वह भी क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबंध है, क्योंकि, वह दो प्रकारके लोभके क्षयसे उत्पन्न होता है। क्षीणराग जीवमें जो भाव होता है वह भी अविपाक-प्रत्ययिक जीवभावबंध है, क्योंकि, वह दोनों प्रकारके माया, लोभ, हास्य, रति और तीन वेदरूप कर्मोंके क्षयसे उत्पन्न होता है। क्षीणदोष जीवमें जो भाव होता है वह भी क्षायिक अविपाक-प्रत्ययिक जीवभावबंध है, क्योंकि, वह दोनों प्रकारके क्रोध, मान, अरति, शोक, भय और जुगु-प्सारूप कर्मोंके क्षयसे उत्पन्न होता है। क्षीणमोह जीवमें जो भाव होता है वह क्षायिक अवि-पाकप्रत्ययिक जीवभावबंध है, क्योंकि, वह अट्ठाईस प्रकारके मोहनीयके क्षयसे उत्पन्न होता है। क्षीणकषाय-वीतरागछद्मस्थ जीवमें जो भाव होता है वह भी क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक जीव-भावबंध है, क्योंकि, वह पच्चीस कषायोंके निरशेष क्षयसे उत्पन्न होता है। जो क्षायिक सम्यक्त्व है वह भी क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, वह दर्शनमोहनीयके क्षयसे उत्पन्न होता है। जो क्षायिक चारित्र है, वह भी क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबंध है, क्योंकि, वह चारित्रमोहनीयके क्षयसे उत्पन्न होता है। जो क्षायिक दानलब्धि है वह भी क्षायिक अवि-पाकप्रत्ययिक जीवभावबंध है, क्योंकि, वह दानान्तरायके निर्मूल क्षयसे उत्पन्न होती है।

✽ मप्रतिपाठोऽयम् अ-आ-काताप्रतिषु 'समुप्पत्तीए' इति पाठः। एवमग्रेऽपि।

सव्वेसिं जीवाणमिच्छिदत्थे किण्ण देंति ? ण, तेसिं जीवाणं लाहंतराइयभावादो । जा खइया लाहलद्धी सो खइयो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो, लाहंतराइयक्खएण समुप्पत्तीदो । अरहंता जदि खीणलाहंतराइया तो तेसिं सव्वत्थोवलंभो किण्ण जायदे? सच्चं, अत्थि तेसिं सव्वत्थोवलंभो, सगायत्तासेसभुवणत्तादो । जा खइया भोगलद्धी सो वि खइओ अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो, भोगंतराइयक्खएण समुप्पत्तीदो । जा खइया परिभोगलद्धी सो वि खइओ अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो, परिभोगंतराइय-क्खएण समुप्पत्तीदो । जदि अरिहंता खीणपरिभोगंतराइया तो किण्ण भोगेंति परिभो-गेंति वा? ण, खीणकसायाणं उवभोग-परिभोगेहि पओजणाभावादो* । जा खइया विरियलद्धी सो खइओ अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो, विरियंतराइयक्खएण समुप्प-त्तीदो । केवलणाणं केवलदंसणं च खइयो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो, केवल-णाण-दंसणावरणक्खएण समुप्पत्तीदो । सिद्धे जो भावो सो खइयो अविवागपच्चइयो,

शंका– अरिहन्तोंके दानान्तरायका तो क्षय हो गया है, फिर वे सब जीवोंको इच्छित अर्थ क्यों नहीं देते ?

समाधान– नहीं, क्योंकि, उन जीवोंके लाभान्तराय कर्मका सद्भाव पाया जाता है ।

जो क्षायिक लाभलब्धि है वह भी क्षायिक अविपाक प्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, वह लाभान्तराय कर्मके क्षयसे उत्पन्न होती है ।

शंका– अरिहन्तोंके यदि लाभान्तराय कर्मका क्षय हो गया है तो उनको सब पदार्थोंकी प्राप्ति क्यों नहीं होती ?

समाधान– सत्य है, उन्हे सब पदार्थोंकी प्राप्ति होती है, क्योंकि, उन्होंने अशेष भुवनको अपने आधीन कर लिया हैं ।

जो क्षायिक भोगलब्धि है वह भी जायिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, वह भोगान्तराय कर्मके क्षयसे उत्पन्न होती है । जो क्षायिक परिभोग लब्धि है वह भी क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, वह परिभोगान्तराय कर्मके क्षयसे उत्पन्न होती है ।

शंका– यदि अरिहन्तोंके (भोगान्तराय और) परिभोगान्तराय कर्मका क्षय हो गया है तो वे अन्य पदार्थोंका (उपभोग और) परिभोग क्यों नहीं करते ?

समाधान– नहीं, क्योंकि, जो जीव क्षीणकषाय होते हैं उनका उपभोग-परिभोगसे प्रयोजन नहीं रहता ।

जो क्षायिक वीर्यलब्धि है वह भी क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, वह वीर्यान्तराय कर्मके क्षयसे उत्पन्न होती है । केवलज्ञान और केवलदर्शन क्षायिक अविपाक-प्रत्ययिक जीवभावबन्ध हैं, क्योंकि, ये क्रमशः केवलज्ञानावरण और केवलदर्शनावरण कर्मके क्षयसे उत्पन्न होते हैं जो सिद्धभाव है वह भी क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि,

* प्रतिषु ' उपभोगे परिभोगहि य जोजणाभावादो ' इति पाठः ।

अट्ठकम्मक्खएण समुप्पत्तीदो। बुद्धे जो भावो सो वि खइओ अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो, अंतरंग-बहिरंगावरणक्खएण समुप्पत्तीदो। परिणिव्वुदे जो भावो सो वि खइयो अविवागपच्चइओ, असेसकम्मक्खएण समुप्पत्तीदो। सव्वदुक्खाणमंतयडत्तं पि खइयो अविवागपच्चइओ, सव्वदुक्खएण समुप्पत्तीदो। जे च अमी पुव्वुत्ता भावा अण्णे च समयं पडि समुब्भूदा सो सव्वो खइयो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो णाम।

जो सो तदुभयपच्चइयो जीवभावबंधो णाम तस्स इमो णिद्देसो -- खओवसमियं एइंदियलद्धि त्ति वा खओवसमियं बीइंदियलद्धि त्ति वा खओवसमियं तीइंदियलद्धि त्ति वा खओवसमियं चउरिंदियलद्धि त्ति वा खओवसमियं पंचिंदियलद्धि त्ति वा खओवसमियं मदिअण्णाणि त्ति वा खओवसमियं सुदअण्णाणि त्ति वा खओवसमियं विहंगणाणि त्ति वा खओवसमियं आभिणिबोहियणाणि त्ति वा खओवसमियं सुदणाणि त्ति त्ति वा खओवसमियं ओहिणाणि त्ति वा खओवसमियं मण-

---

वह आठों कर्मोंके क्षयसे उत्पन्न होता है। जो बुद्धभाव है वह भी क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबंध है, क्योंकि, वह अन्तरंग और बहिरंग आवरणके क्षयसे उत्पन्न होता है। जो परिनिर्वृत भाव है वह भी क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक है, क्योंकि, वह अशेष कर्मोंके क्षयसे उत्पन्न होता है। सब दुःखोंका अन्तकृत्त्व भी क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक है, क्योंकि, वह सब दुःखोंके क्षयसे उत्पन्न होता। ये पूर्वोक्त भाव और दूसरे भी भाव जो प्रतिसमय उत्पन्न होते हैं वह सब क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है।

विशेषार्थ- यहाँ क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध इक्कीस गिनाये हैं और इनके साथ प्रतिसमय होनेवाले अन्य क्षायिक भावोंकी सूचना की है। तत्त्वार्थसूत्रमें क्षायिक सम्यक्त्व, क्षायिक चारित्र, केवलज्ञान, केवलदर्शन और पाँच क्षायिक लब्धियाँ; ये कुल नौ भाव गिनाये हैं। यहाँ गिनाये गये भावोंमें कुछ ऐसे भाव अवश्य हैं जिनका अलगसे उल्लेख करना यहां आवश्यक है। जैसे सिद्धभाव, सर्वदुःख-अन्तकृद्भाव आदि। शेषका कथंचित् अन्तर्भाव हो जाता है। यद्यपि पाँच लब्धियोंका काम बाह्य सामग्रीकी प्राप्त नहीं है, किन्तु कहीं कहीं उनका काम बाह्य सामग्रीकी प्राप्ति बतलाया गया है, जो उपचार कथन है।

जो तदुभयप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है उसका निर्देश इस प्रकार है-- क्षायोपशमिक एकेन्द्रियलब्धि, क्षायोपशमिक द्वीन्द्रियलब्धि, क्षायोपशमिक त्रीन्द्रियलब्धि, क्षायोपशमिक चतुरिन्द्रियलब्धि, क्षायोपशमिक पञ्चेन्द्रियलब्धि, क्षायोपशमिक मत्यज्ञानी, क्षायोपशमिक श्रुताज्ञानी, क्षायोपशमिक विभंगज्ञानी, क्षायोपशमिक आभिनिबोधिकज्ञानी, क्षायोपशमिक श्रुतज्ञानी, क्षायोपशमिक अवधिज्ञानी, क्षायोपशमिक मनःपर्यय- --

पज्जवणाणि त्ति वा खओवसमियं चक्खुदंसणि त्ति वा खओवसमियं अचक्खुदंसणि त्ति वा खओवसमियं ओहिदंसणि त्ति वा खओवसमियं सम्मामिच्छत्तलद्धि त्ति वा खओवसमियं सम्मत्तलद्धि त्ति वा खओवसमियं संजमासंजमलद्धि त्ति वा खओवसमियं संजमलद्धि त्ति वा खओवसमियं दाणलद्धि त्ति वा खओवसमियं लाहलद्धि त्ति वा खओवसमियं भोगलद्धि त्ति वा खओवसमियं परिभोगलद्धि त्ति वा खओवसमियं वीरियलद्धि त्ति वा खओवसमियं से आयारधरे त्ति वा खओवसमियं सूदयडधरे त्ति वा खओवसमियं ठाणधरे त्ति वा खओवसमियं समवायधरे त्ति वा खओवसमियं वियाहपण्णत्तिधरे त्ति वा खओवसमियं णाहधम्मधरे त्ति वा खओवसमियं उवासयज्झेणधरे त्ति वा खओवसमियं अंतयडधरे त्ति वा खओवसमियं अणुत्तारोववादियदसधरे त्ति वा खओवसमियं पण्णवागरणधरे त्ति वा खओवसमियं विवागसुत्तधरे त्ति वा खओवसमिमं दिट्ठिवादधरे त्ति वा खओवसमियं गणि त्ति वा खओवसमियं वाचगे त्ति वा खओवसमियं दसपुव्वहरे त्ति वा खओवसमियं चोद्दसपुव्वहरे त्ति वा जे चामण्णे एवमादिया खओवसमियभावा सो सव्वो तदुभयपच्चइओ जीवभावबंधो णाम। १९।

ज्ञानी, क्षायोपशमिक चक्षुदर्शनी, क्षायोपशमिक अचक्षुदर्शनी, क्षायोपशमिक अवधिदर्शनी, क्षायोपशमिक सम्यग्मिथ्यात्वलब्धि, क्षायोपशमिक सम्यक्त्वलब्धि, क्षायोपशमिक संयमासंयमलब्धि, क्षायोपशमिक संयमलब्धि, क्षायोपशमिक दानलब्धि, क्षायोपशमिक लाभलब्धि, क्षायोपशमिक भोगलब्धि, क्षायोपशमिक परिभोगलब्धि, क्षायोपशमिक वीर्यलब्धि, क्षायोपशमिक आचारधर, क्षायोपशमिक सूत्रकृद्धर, क्षायोपशमिक स्थानधर, क्षायोपशमिक समवायधर, क्षायोपशमिक व्याख्याप्रज्ञप्तिधर, क्षायोपशमिक नाथधर्मधर, क्षायोपशमिक उपासकाध्ययनधर, क्षायोपशमिक अन्तकृद्धर, क्षायोपशमिक अनुत्तरौपपादिकदशधर, क्षायोपशमिक प्रश्नव्याकरणधर, क्षायोपशमिक विपाकसूत्रधर, क्षायोपशमिक दृष्टिवादधर, क्षायोपशमिक गणी, क्षायोपशमिक वाचक, क्षायोपशमिक दशपूर्वधर, क्षायोपशमिक चतुर्दश पूर्वधर; ये तथा इसी प्रकारके और भी दूसरे जो क्षायोपशमिक भाव हैं वह सब तदुभयप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है ॥ १९ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो उच्चदे। तं जहा-एत्थ सव्वे वा-सद्दा समुच्चयट्ठे दट्ठव्वा। एइंदियलद्धि त्ति एदं च खओवसमियं, पासिंदियावरणखओवसमेण समुप्पत्तीए। बेइंदियलद्धि त्ति एदं पि खओवसमियं, फासिंदियावरणक्खओवसमेण समुप्पत्तीए। तीइंदियलद्धि त्ति एदं च खओवसमियं, जिब्भा फास-घाणिंदियावरणाणं खओवसमेण समुप्पत्तीए। चउरिंदियलद्धि त्ति एदं च खओवसमियं, जिब्भा-फास-घाण- चक्खिंदियावरणाणं खओवसमेण समुप्पत्तीए। पंचिंदियलद्धि त्ति एदं च खओवसमियं, पंचण्णमिंदियावरणाणं खओवसमेण समुप्पत्तीए। मदिअण्णाणि त्ति एदं पि खओवसमियं, मदिणाणावरणखओवसमेण समुप्पत्तीए। कुदो एदं मदिअण्णाणित्तं तदुभयपच्चइयं? मिच्छत्तस्स सव्वघादिफद्दयाणमुदएण णाणावरणीयस्स देसघादिफद्दयाणमुदएण तस्सेव सव्वघादिफद्दयाणमुदयक्खएण च मदिअण्णाणित्तुप्पत्तीदो। सुदअण्णाणि त्ति तदुभयपच्चइयो जीवभावबंधो, सुदणाणावरणस्स देसघादिफद्दयाणमुदएण मिच्छत्तोदयाणुविद्धेण समुप्पत्तीदो। विहंगणाणि त्ति तदुभयपच्चइयो जीवभावबंधो, ओहिणाणावरणदेसघादिफद्दयाणमुदएण मिच्छत्ताणुविद्धेण समुप्पत्तीदो। आभिणिबोहियणाणाणि त्ति तदुभयपच्चइओ जीवभावबंधो, मदिणाणावरणीयस्स देसघादिफद्दयाणमुदएण तिविहसम्मत्तसहाएण तदुप्पत्तीदो। आभिणिबोहियणाणस्स

अब इस सूत्रका अर्थ कहते हैं। यथा-इस सूत्रमें सब 'वा' शब्द समुच्चयरूप अर्थमें जानने चाहिये। एकेन्द्रियलब्धि यह भी क्षायोपशमिक है, क्योंकि, वह स्पर्शनइन्द्रियावरण कर्मके क्षयोपशमसे उत्पन्न होती है। द्वीन्द्रियलब्धि यह भी क्षायोपशमिक है, क्योंकि, वह जिह्वा और स्पर्शन इन्द्रियावरण कर्मोंके क्षयोपशमसे उत्पन्न होती है। त्रीन्द्रियलब्धि यह भी क्षायोपशमिक है, क्योंकि, यह जिह्वा, स्पर्शन और घ्राण इन्द्रियावरण कर्मोंके क्षयोपशमसे उत्पन्न होती है। चतुरिन्द्रियलब्धि यह भी क्षायोपशमिक है, क्योंकि, यह जिह्वा, स्पर्शन, घ्राण और चक्षु इन्द्रियावरण कर्मोंके क्षयोपशमसे उत्पन्न होती है। पञ्चेन्द्रियलब्धि यह भी क्षायोपशमिक है, क्योंकि, यह पाँचों इन्द्रियावरण कर्मोंके क्षयोपशमसे उत्पन्न होती है। मत्यज्ञानी यह भी क्षायोपशमिक है, क्योंकि, यह मतिज्ञानावरण कर्मके क्षयोपशमसे उत्पन्न होता है।

शंका- यह मत्यज्ञानित्व तदुभयप्रत्ययिक कैसे है ?

समाधान- मिथ्यात्वके सर्वघाती स्पर्धकोंका उदय होनेसे तथा ज्ञानावरणीयके देशघाति स्पर्धकोंका उदय होनेसे और उसीके सर्वघाति स्पर्धकोंका उदयक्षय होनेसे मत्यज्ञानित्वकी उत्पत्ति होती है, इसलिये वह तदुभयप्रत्ययिक है।

श्रुतज्ञानी तदुभयप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, यह मिथ्यात्व कर्मके उदयसे युक्त श्रुतज्ञानावरण कर्मके देशघाति स्पर्धकोंके उदयसे उत्पन्न होता है। विभंगज्ञानी तदुभयप्रत्ययिक जीवभावबन्ध हैं, क्योंकि, मिथ्यात्वसे युक्त अवधिज्ञानावरण कर्मके देशघाति स्पर्धकोंके उदयसे इसकी उत्पत्ति होती है। आभिनिबोधिकज्ञानी तदुभयप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, तीन प्रकारके सम्यक्त्वसे युक्त मतिज्ञानावरणीय कर्मके देशघाति स्पर्धकोंके उदयसे इसकी उत्पत्ति होती है।

उदयपच्चइयत्तं घडदे, मदिणाणावरणीयस्स देसघादिफद्दयाणमुदएण समुप्पत्तीए । णोवसमियपच्चइयत्तं, उवसमाणुवलंभादो? ण, णाणावरणीयसव्वघादिफद्दयाणमुदयाभावेण उवसमसण्णिदेण आभिणिबोहियणाणुप्पत्तिदंसणादो । एवं सुदणाणि-ओहिणाणि मणपज्जवणाणि-चक्खुदंसणि-अचक्खुदंसणि-ओहिदंसणिआदीणं वत्तव्वं, विसेसाभावादो । सम्मामिच्छत्तलद्धि त्ति खओवसमियं, सम्मामिच्छत्तोदयजणिदत्तादो । सम्मामिच्छत्तफद्दयाणि सव्वघादीणि चेव, कधं तदुदएण समुप्पण्णं सम्मामिच्छत्तं उभयपच्चइयं होदि? ण, सम्मामिच्छत्तफद्दयाणमुदयस्स सव्वघादित्ताभावादो । तं कुदो णव्वदे? तत्थतणसम्मत्तस्सुप्पत्तीए अण्णहाणुववत्तीदो । सम्मामिच्छत्तदेसघादिफद्दयाणमुदएण तस्सेव सव्वघादिफद्दयाणमुदयाभावेण उवसमसण्णिदेण सम्मामिच्छत्तमुप्पज्जदि त्ति तदुभयपच्चइयत्तं । (सम्मत्तलद्धि त्ति खओवसमियं, सम्मत्तोदयजणिदत्तादो । सम्मत्तफद्दयाणि देसघादीणि चेव, कधं तदुदएण समुप्पण्णं उभयपच्चइयं होदि?) ण, सम्मत्त✱

शंका– आभिनिबोधिकज्ञानके उदयप्रत्ययिकपना बन जाता है, क्योंकि, मतिज्ञानावरण कर्मके देशघाति स्पर्धकोंके उदयसे इसकी उत्पत्ति होती है । पर औपशमिकनिमित्तकपना नहीं बनता, क्योंकि, मतिज्ञानावरण कर्मका उपशम नहीं पाया जाता ?

समाधान– नहीं, क्योंकि, ज्ञानावरणीय कर्मके सर्वघाति स्पर्धकोंके उपशम संज्ञावाले उदयाभावसे आभिनिबोधिक ज्ञानकी उत्पत्ति देखी जाती है, इसलिये इसका औपशमिकनिमित्तकपना भी बन जाता है ।

इसी प्रकार श्रुतज्ञानी, अवधिज्ञानी, मनःपर्ययज्ञानी, चक्षुदर्शनी, अचक्षुदर्शनी और अवधिदर्शनी आदिका कथन करना चाहिये, क्योंकि, उपर्युक्त कथनसे इनके कथनमें कोई विशेषता नहीं है ।

सम्यग्मिथ्यात्व लब्धि क्षायोपशमिक है, क्योंकि, वह सम्यग्मिथ्यात्वके उदयसे उत्पन्न होती है ।

शंका– सम्यग्मिथ्यात्व कर्मके स्पर्धक सर्वघाति ही होते हैं, इसलिये इनके उदयसे उत्पन्न हुआ सम्यग्मिथ्यात्व उभयप्रत्ययिक कैसे हो सकता है ?

समाधान–नहीं, क्योंकि, सम्यग्मिथ्यात्व कर्मके स्पर्धकोंका उदय सर्वघाति नहीं होता।

शंका– वह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान– क्योंकि, सम्यग्मिथ्यात्वमें सम्यक्त्वरूप अंशकी उत्पत्ति अन्यथा बन नहीं सकती । इससे मालूम पडता है कि सम्यग्मिथ्यात्व कर्मके स्पर्धकोंका उदय सर्वघाति नहीं होता ।

सम्यग्मिथ्यात्वके देशघाति स्पर्धकोंके उदयसे और उसीके सर्वघाति स्पर्धकोंके उपशम संज्ञावाले उदयाभावसे सम्यग्मिथ्यात्वकी उत्पत्ति होती है, इसलिये वह तदुभयप्रत्ययिक कहा गया है ।

सम्यक्त्वलब्धि क्षायोपशमिक है, क्योंकि, वह सम्यक्प्रकृतिके उदयसे उत्पन्न होती है ।

शंका– सम्यक्प्रकृतिके स्पर्धक देशघाति ही होते हैं । उसके उदयसे उत्पन्न हुआ सम्यक्त्व उभयप्रत्ययिक कैसे हो सकता है ?

✱ ताप्रतौ 'ण, (सम्मत्तलद्धित्ति तदुययपच्चइयत्तं), सम्मत्तं-' इति पाठः ।

देसघादिफद्दयाणमुदएण सम्मत्तुप्पत्तीदो ओदइयं। ओवसमियं पि तं, सव्वघादिफद्दयाणमुदयाभावादो। दंसणमोहणीयभेदसम्मत्तफद्दयाणं सव्वघादित्तणेण उवसंताणं देसघादित्तणेण उदिण्णाणं कारियं वेदगसम्मत्तमिदि तदुभयपच्चइयत्तं उच्चदि त्ति भणिदं होदि। एसो अत्थो पुव्विल्लेसु उत्तरिल्लेसु पदेसु जोजेयव्वो, पहाणत्तादो। एवं संजमासंजम-संजम-दाण-लाह-भोग-परिभोग-वीरियलद्धीणं पि तदुभयपच्चइयत्तं परूवेदव्वं। आयारधरे त्ति तदुभयपच्चइयो जीवभावबंधो, आयारसुदणाणावरणस्स देसघादिफद्दयाणं सव्वघादित्तणेण उवसंताणमुदएण आयारसुदुप्पत्तीदो। एवं जाणिदूण वत्तव्वं जाव दिट्ठिवादधरे त्ति वा। एका दशांगविद् गणी। द्वादशांगविद्वाचकः। एवमेदे खओवसमिया भावा अण्णे वि सुहुमीभूदा तदुभयपच्चइयो जीवभावबंधो णाम।

जो सो अजीवभावबन्धो णाम सो तिविहो विवागपच्चइयो अजीवभावबंधो चेव अविवागपच्चइयो अजीवभावबंधो चेव तदुभयपच्चइयो अजीवभावबंधो चेवं ॥ २० ॥

मिच्छत्तासंजम-कसाय-जोगेहिंतो पुरिसपओगेहि वा जे णिप्पण्णा अजीवभावा

समाधान– नहीं, क्योंकि सम्यक्त्वके देशघाति स्पर्धकोंके उदयसे सम्यक्त्वकी उत्पत्ति होती है, इसलिये तो वह औदायिक है। और वह औपशमिक भी है, क्योंकि, वहाँ सर्वघाति स्पर्धकोंका उदय नहीं पाया जाता।

सम्यक्प्रकृति दर्शनमोहनीयका एक भेद है। उसके सर्वघातिरूपसे उपशमको प्राप्त हुए और देशघातिरूपसे उदयको प्राप्त हुए स्पर्धकोंका वेदकसम्यक्त्व कार्य है, इसलिये वह तदुभय-प्रत्ययिक कहा गया है; यह उक्त कतनका तात्पर्य है। इस अर्थकी पहलेके और आगेके सब पदोंमें योजना करनी चाहिए, क्योंकि, उभयनिमित्तक भावोंमे इसीकी प्रधानता है।

इसी प्रकार संयमासंयमलब्धि, संयमलब्धि, दानलब्धि, लाभलब्धि, भोगलब्धि, परिभोगलब्धि और वीर्यलब्धिको भी तदुभयप्रत्ययिक कहना चाहिये।

आचारधर तदुभयप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, आचारश्रुतज्ञानावरणके सर्वघातिरूपसे उपशमको प्राप्त हुए देशघातिस्पर्धकोंके उदयसे आचारश्रुतकी उत्पत्ति होती है इसी प्रकार दृष्टिवादधर तकके सब पदोंका जानकर व्याख्यान करना चाहिये।

ग्यारह अंगका ज्ञाता गणी कहलता है और बारह अंगका ज्ञाता वाचक कहलाता है।

इस प्रकार ये क्षायोपशमिक भाव और अति सूक्ष्म दूसरे भी क्षायोपशमिक भाव तदुभयप्रत्ययिक जीवभावबन्ध हैं।

विशेषार्थ– यहाँपर क्षायोपशमिकभावके भेद बहुत विस्तारसे किए गए हैं, फिर भी तत्त्वार्थसूत्रमें इस भावके जितने भेद किए गए हैं उनमें इन सब भावोंका अन्तर्भाव हो जाता है।

अजीवभावबन्ध तीन प्रकारका है–विपाकप्रत्ययिक अजीवभावबन्ध, अविपाक-प्रत्ययिक अजीवभावबन्ध और तदुभयप्रत्ययिक अजीवभावबन्ध ॥ २० ॥

मिथ्यात्व, असंयम, कषाय और योगसे या पुरुषके प्रयत्नसे जो अजीवभाव उत्पन्न होते हैं

तेसिं विवागपच्चइओ अजीवभावबंधो त्ति सण्णा । जे अजीवभावा मिच्छत्तादिकारणेहि विणा समुप्पण्णा तेसिमविवागपच्चइओ अजीवभावबंधो त्ति सण्णा । जे दोहि वि कारणेहि समुप्पण्णा तेसिं तदुभयपच्चइयो अजीवभावबंधो त्ति सण्णा । एवं तिविहो चेव अजीवभावबंधो होदि, अण्णस्स असंभवादो ।

जो सो विवागपच्चइयो अजीवभावबंधो णाम तस्स इमो णिद्देसो– पओगपरिणदा वण्णा पओगपरिणदा सद्दा पओगपरिणदा गंधा पओगपरिणदा रसा पओगपरिणदा फासा पओगपरिणदा गदी पओगपरिणदा ओगाहणा पओगपरिणदा संठाणा पओगपरिणदा खंधा पओगपरिणदा खंधदेसा पओगपरिणदा खंधपदेसा जे चामण्णे एवमादिया पओगपरिणदसंजुत्ता भावा सो सव्वो विवागपच्चइओ अजीवभावबंधो णाम ॥ २१ ॥

वण्णणामकम्मोदएण ओरालियसरीरखंधेसु जादवण्णा पओगपरिणदा णाम,

उनकी विपाकप्रत्ययिक अजीवभावबन्ध यह संज्ञा है । जो अजीवभाव मिथ्यात्व आदि कारणोंके बिना उत्पन्न होते हैं उनकी अविपाकप्रत्ययिक अजीवभावबन्ध यह संज्ञा है । और जो दोनों ही कारणोंसे उत्पन्न होते हैं उनकी तदुभयप्रत्ययिक अजीवभावबन्ध यह संज्ञा है । इस तरह तीन प्रकारका ही अजीवभावबन्ध होता है, क्योंकि, इनके सिवा अन्य अजीवभावबन्ध सम्भव नहीं हैं ।

विशेषार्थ–यहाँ जीवभावबन्धके समान अजीवभावबन्ध भी तीन प्रकारका बतलाया गया है । यहाँ विपाकसे पुरुषका प्रयत्न या उसके मिथ्यात्व आदि भाव लिये गये हैं । इनके निमित्तसे पुद्गलकी जो रूप रसादि पर्यायें या दूसरी अवस्थायें होती हैं वे विपाकप्रत्ययिक अजीवभावबन्ध कहलाते हैं । जो पुरुषके प्रयत्नके बिना पुद्गलके बन्धरूप विविध प्रकारके परिणमन होते हैं वे अविपाकप्रत्ययिक अजीवभावबन्ध कहलाते हैं और तदुभय इन दोनोंरूप होते हैं । यह उक्त कथनका सार है ।

जो विपाकप्रत्ययिक अजीवभावबन्ध होता है उसका निर्देश इस प्रकार है–– प्रयोगपरिणत वर्ण, प्रयोगपरिणत शब्द, प्रयोगपरिणत गन्ध, प्रयोगपरिणत रस, प्रयोगपरिणत स्पर्श, प्रयोगपरिणत गति, प्रयोगपरिणत अवगाहना, प्रयोगपरिणत संस्थान, प्रयोगपरिणत स्कन्ध, प्रयोगपरिणत स्कन्धदेश और प्रयोगपरिणत स्कन्ध-प्रदेश; ये और इनसे लेकर जो दूसरे भी प्रयोगपरिणत संयुक्त भाव होते हैं वह सब विपाकप्रत्ययिक अजीवभावबन्ध है ॥ २१ ॥

वर्ण नामकर्मके उदयसे औदारिकशरीरके स्कन्धोंमें उत्पन्न हुए वर्ण प्रयोगपरिणत वर्ण हैं

हलिद्दचुण्णजोगेण पूअफल-पण्णचुण्णसंजोगेण वा जणिदवण्णा वि पओअपरिणदा णाम। संख-वीणा-वंस-भेरी-पटह-झल्लरी-मुइंगसद्दा कंठोट्ठादिजणिदसद्दा च पओअपरिणदा त्ति भण्णंते। गंधजुत्तिसत्थवुत्तविहाणेण जणिदगंधा पओअपरिणदा णाम। सूअसत्थउत्त-विहाणेण जणिदरसा पओअपरिणदा रसा णाम रसणामकम्मजणिदरसा वा। फासणा-मकम्मोदयजणिदट्ठफासा पओअपरिणदा णाम रूवादिपासा ✡ वा। कंड-सेल्ल-जंत-गोफण-वत्थरादीणं गई पओअपरिणदा। कट्टिमजिणभवणादीणमोगाहणा पओअपरि-णदा। कट्ठ-सिला-थंभ-तुलादीणं कट्टिमाणं संठाणा पओअपरिणदा। घड-पिढर-रंजणा-दीणं पि कट्टिमाणं खंधा पओअपरिणदा। पओअपरिणदाणं खंधाणमद्धं तिभागो वा पओअपरिणदा ✡ खंधदेसा। पओअपरिणदाणं खंधाणं भेदं गदाणं चदुब्भागो पंचम-भागो वा पओअपरिणदा खंधपदेसा। जे च अमी अण्णे च एवमादिया पओअपरिणदा संजुत्ता भावा सो सव्वो विवागपच्चइओ अजीवभावबंधो णाम।

जो सो अविवागपच्चइओ अजीवभावबंधो णाम तस्स इमो णिद्देसो– विस्ससापरिणदा वण्णा विस्ससापरिणदा सद्दा विस्ससापरि-णदा गंधा विस्ससापरिणदा रसा विस्ससापरिणदा फासा विस्ससा

या हलदीके और चूनेके योगसे अथवा पूगफल और पर्णचूर्णके योगसे उत्पन्न हुए वर्ण भी प्रयोगपरिणत वर्ण हैं। शंख, वीणा, बाँस, भेरी, पटह, झालर और मृदंगके शब्द और कण्ठ, ओष्ठ आदिसे उत्पन्न हुए शब्द भी प्रयोगपरिणत शब्द हैं। गन्ध बनानेकी युक्तिका कथन कर-नेवाले शास्त्रमें जो विधि कही है उसके अनुसार उत्पन्न किये गये गन्ध प्रयोगपरिणत गन्ध हैं। भोजनशास्त्रमें कही हुई विधिके अनुसार उत्पन्न किये गये रस प्रयोगपरिणत रस हैं या रस नामकर्मके उदयसे उत्पन्न हुए रस प्रयोगपरिणत रस हैं। स्पर्श नामकर्मके उदयसे उत्पन्न हुए आठ प्रकारके स्पर्श प्रयोगपरिणत स्पर्श हैं, अथवा रुई आदिमें संस्कारसे जो आठ प्रकारके स्पर्श उत्पन्न किये जाते हैं वे प्रयोगपरिणत स्पर्श हैं।

लकडी, शैल, यन्त्र, गोफन और पत्थर आदिकी गति प्रयोगपरिणत गति है। कृत्रिम जिनभवन आदिकी अवगाहना प्रयोगपरिणत अवगाहना है। बनाये गये काष्ठ, शिला, स्तम्भ और तराजू आदिके आकार प्रयोगपरिणत संस्थान हैं। बनाये गये घट, पिढर और रांजन आदिके भी स्कन्ध प्रयोगपरिणत स्कन्ध हैं। प्रयोगपरिणत स्कन्धोंका चौथा भाग या तृतीय भाग प्रयोगपरिणत स्कन्धदेश हैं और भेदको प्राप्त हुए प्रयोगपरिणत स्कन्धोंका चौथा भाग या पाँचवाँ भाग प्रयोगपरिणत स्कन्धप्रदेश हैं। ये या इनसे लेकर इसी प्रकारके प्रयोगपरिणत जो दूसरे भी संयुक्त भाव हैं वह सब विपाकप्रत्ययिक अजीव भावबन्ध हैं।

जो अविपाकप्रत्ययिक अजीवभावबन्ध है उसका निर्देश इस प्रकार है–विस्रसा-परिणत वर्ण, विस्रसापरिणत शब्द, विस्रसापरिणत गन्ध, विस्रसापरिणत रस, विस्रसा-

---

✡ अ-आ- काप्रतिषु 'रूवा का पश। बादिपासा' इति पाठः।

परिणदा गदी विस्ससापरिणदा ओगाहणा विस्ससापरिणदा संठाणा विस्ससापरिणदा खंधा विस्ससापरिणदा खंधदेसा विस्ससापरिणदा खंधपदेसा जे चामण्णे एवमादिया विस्ससापरिणदा संजुत्ता भावा सो सव्वो अविवागपच्चइओ अजीवभावबंधो णाम ॥ २२ ॥

अवट्टिमाणं भवण-विमाण-मेरु कुलसेलादीणं वण्णो पुढवि-आउ तेउ-वाऊणमकट्टिम-वण्णा च विस्ससापरिणदा णाम । वंसादीणं मुत्तिदव्वाणं संघट्टणेण समुट्ठिदा विस्स-सापरिणदा सद्दा । कत्थूरि-कुंकुमागरु-तमालपत्तादीणं जे साभाविया गंधा ते विस्स-सापरिणदा गंधा । जंबू-जंबीर-पणसंबादीणं फलाणं पुप्फंकुरादीणं च साभाविया जे रसा ते विस्ससापरिणदा रसा । पउमुप्पलादीणं जे साभाविया फासा ते विस्ससाप-रिणदा फासा । चंदाइच्चगह-णक्खत्त-ताराणं वाऊणं च जा गदी सा विस्ससाप-रिणदा गदी । अकिट्टिमाणं भवणविमाणाणं जिणहराणं सिद्धखेत्तागासाणं जा ओगाहणा सा विस्ससापरिणदा ओगाहणा णाम । गंध रस-फासा जेसु पुव्वुद्दिट्ठा ते गंध-रस-फासणामकम्मोदयजणिदा त्ति अविवागपच्चइत्तं ण जुज्जदे? जदि एवं तो एदे मोत्तूण पोग्गलाणं जे साभाविया गंध-रस-फासा ते घेत्तव्वा ।

परिणत स्पर्श, विस्रसापरिणत गति, विस्रसापरिणत अवगाहना, विस्रसापरिणत संस्थान, विस्रसापरिणत स्कन्ध, विस्रसापरिणत स्कन्धदेश और विस्रसापरिणत स्कन्धप्रदेश; ये और इनसे लेकर इसी प्रकारके विस्रसापरिणत जो दूसरे संयुक्त भाव हैं वह सब अविपाकप्रत्ययिक अजीवभावबन्ध है ॥ २२ ॥

अकृत्रिम भवन, विमान, मेरुपर्वत और कुलपर्वत आदिके वर्ण या पृथिवी, जल, अग्नि और वायुके अकृत्रिम वर्ण विस्रसा परिणत वर्ण हैं। बाँस आदि मूर्त द्रव्योंके संघर्षणसे उत्पन्न हुए शब्द विस्रसापरिणत शब्द हैं । कस्तूरी, कुंकुम, अगरु और तमालपत्र आदिकी जो स्वाभाविक गन्ध होती हैं वह विस्रसापरिणत गन्ध है । जम्बू , जंबीर, पनस और आम्र आदि फलोंके तथा फूल और अंकुर आदिके जो स्वाभाविक रस होते हैं वे विस्रसापरिणत रस हैं । पद्म और उत्पल आदिके जो स्वाभाविक स्पर्श होते हैं वे विस्रसापरिणत स्पर्श हैं । चन्द्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र और ताराओंकी तथा वायुकी जो गति होती है वह विस्रसापरिणत गति है । अकृत्रिम भवन, विमान और जिन-घर आदि तथा सिद्धक्षेत्रके आकाशकी जो अवगाहना है वह विस्रसापरिणत अवगाहना है ।

शंका—जिन पदार्थोंमें पूर्वनिर्दिष्ट गन्ध, रस और स्पर्श नामकर्मके उदयसे उत्पन्न हुए गन्ध, रस और स्पर्श होते हैं वे अविपाकप्रत्ययिक नहीं बन सकते ?

समाधान—यदि ऐसा है तो इन्हें छोड़कर पुद्गलोंके जो स्वाभाविक वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्श होते हैं वे यहाँपर लेने चाहिये ।